बिहार में बंद पड़ी कोयला खानें

411. **श्रीमती सुषमा स्वराज :**

श्री रणजीत सिंह :

क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण होने के बाद से देश में, विशेष रूप से बिहार में अनेकों कोयला खानें बंद पड़ी है ;

(ख) यदि हां, तो बंद पड़ी कोयला खानों की कुल संख्या कितनी है और उनकी राज्यवार संख्या क्या है ;

(ग) क्या सरकार ने गत अनेक वर्षों के दौरान इन खानों में खनन कार्य शुरू करने के लिए कोई प्रयास किए हैं ;

(घ) यदि हां, तो इसके क्या परिणाम निकले हैं और क्या यह सच है कि कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण किए जाने से पहले ये खानें कार्य कर रही थीं ; और

(ङ) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं कि इसके बाद इन खानों ने कार्य करना बंद कर दिया और इस संबध में भावी योजना क्या है ?

कोयला मंत्रालय में उप मंत्री (श्री एस० बी० नयमेगौड़ा) : (क) से (ङ) अक्रियाशील खानों में निम्नलिखित शामिल हैं :—

(क) वह खानें जिन्हें राष्ट्रीयकरण के समय बंद के रूप में लिया गया था और जो बंद ही रही, (ख) वह खानें जिन्हें राष्ट्रीयकरण के समय बंद के रूप में लिया गया था इसके बाद वह खानें खुली किन्तु अब बंद कर दी गई, (ग) वह खानें जिन्हें चालू हालत में लिया गया था किन्तु फिर वह बंद कर दी गई और (घ) वह नई खानें जिन्हें राष्ट्रीयकरण के बाद खोला गया किन्तु इसके बाद उन्हें बंद कर दिया गया था ।

इन खानों के बंद होने अथवा अ-क्रियाशील रहने के कारण निम्नलिखित हैं :—

1. जिन्हें पुर्नस्थापित खान के रूप में मिलाया/पुनः ग्रुप बनाये जाने अथवा सम्मिलित नहीं किया जा सकता ।

2. भौगोलिक स्थिति के कारण संरचनात्मक सुविधाओं का अभाव ।

3. कम मात्रा में कोयले के छोटे भंडार तथा मौसमी उत्खनन क्रियाकलापों के साथ छुटपुट कोयले के भंडार ।

4. ऐसी खानों के लिए अप्रर्याप्त रूप में भू-गर्भीय आंकड़े उपलब्ध हैं ।

5. पुराने खानों के संबंध में भरोसे-मंद कार्य योजनाओं की अनु-पलब्धता ।

6. तकनीकी-आर्थिक रूप से अलाभ-कारी ।

7. निकाले जाने योग्य भंडारों का समापन ।

8. भविष्य में लाभकारिता की किसी संभावनाओं के बिना उच्च अलाभकारी खनन कार्य ।

9. विरीत भू-खनन परिस्थितियां ।

10. सुरक्षा संबंधी कारणों से ।

ऐसी खानों को छोड कर जिसमें कोयले के भंडार पहले ही समाप्त हो गए हैं, सी०आई० एल० उन अक्रियाशील खानों को जहां गहन अन्वेषणों द्वारा वाणिज्यिक क्षमता दर्शायी गई हैं, पुनः खोलने का प्रयास कर रही है ।

सी० आई० एल० द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार अक्रियाशील खानों के राजवार ब्यौरे नीचे दिए गए हैं :—

राज्य का नाम	अक्रियाशील खानों की संख्या
बिहार	45
असम	5
पश्चिमी बंगाल	14
मध्य प्रदेश	1

अभी हाल ही में बिहार सरकार ने बिहार की बंद पड़ी कोलियरियों में कार्य की व्यवहार्यता का अध्ययन करने के लिए संयुक्त जांच समिति संस्थापित की है । यह समिति बिहार सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी । इस आशय का संकेत देना संभव नहीं है कि उक्त खानों के क्रियाकलापों को पुनः कब तक खोला जाएगा ।

कोयले के आयात में वृद्धि

412. **श्री रणजीत सिंह :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या **कोयला** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गत तीन वर्षों के दौरान देश में अच्छी गुणवत्ता वाले कोयले के आयात में निरन्तर वृद्धि हो रही है ;

(ख) यदि हां, तो चालू वर्ष के दौरान अनुमानत : कितनी मात्रा में कोयले का आयात किए जाने की संभावना है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि देश में ही अच्छी गुणवत्ता वाले कोयले के भंडार उपलब्ध हैं; और

(घ) यदि हां, तो क्या सरकार देश में ही इस प्रकार के कोयले का अधिक उत्पादन करके कोयले के आयात में कमी करने के लिए कोई प्रभावी कदम उठा रही है और यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

कोयला मंत्रालय में उप मंत्री (श्री एस० बी० नयमेगौड़ा) : (क) और (ख) एकीकृत इस्पात संयंत्र मुख्यतः निम्न राख वाले कोकर कोयले का आयात देशीय कोयले की उपलब्धता तथा मांग के बीच के अन्तराल को पूरा करने के लिए देशीय कोयले में मिश्रित किए जाने के लिए करते हैं और इसका आयात इस्पात संयंत्रों में प्रयोग किए जाने के लिए इसकी मिश्रण गुणवत्ता में समग्र रूप से सुधार किए जाने के लिए भी किया जाता है। इस्पात संयंत्रों द्वारा आयात किए गए कोककर कोयले की मात्रा नीचे दी गई है :—

(मिलियन टन में

वर्ष	आयातित कोककर कोयला
1989-90	4.66
1990-91	5.72
1991-92 (अनंतिम)	5.25 (टिस्को को छोड़कर)
1992-93 (अनुमानित)	6.00)

(ग) कोककर कोयले के बड़े भंडार झरिया कोयला क्षेत्र में विद्यमान हैं, जहां भू-खनन प्रौद्योगिकी तथा संरचनात्मक संबंधी गंभीर समस्याएं हैं, जोकि निम्न-लिखित हैं :—

आंशिक रूप से उत्खनित खानें, आग का होना और समीप के क्षेत्रों, गांवों, टाउनशिप में जलमग्न खानें और अन्य विनिर्मित ढांचे और ऐसे नाले तथा पुलिया, जिनको स्थानान्तरित किया जाना अपेक्षित है अथवा ऐसी सुरक्षात्मक कार्रवाई, जोकि इस कोयला क्षेत्र में तेजी से विकास किए जाने के मामले में आड़े आ रही हैं ।

(घ) अन्य बातों के अलावा कोककर कोयले की देशीय उपलब्धता को बढ़ाने